नियम-संख्या - 1.1 (नियम-संख्या - 1.1)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 लिपि के 𑆱𑇀𑆮𑆫𑆼𑆁 की 𑆄𑆑𑆸𑆠𑆴 :-

𑆃 𑆄 𑆅 𑆆 𑆇 𑆈

𑆉 𑆊 𑆋 𑆌 𑆍 𑆎

𑆏 𑆐 𑆃𑆁 𑆃𑆂

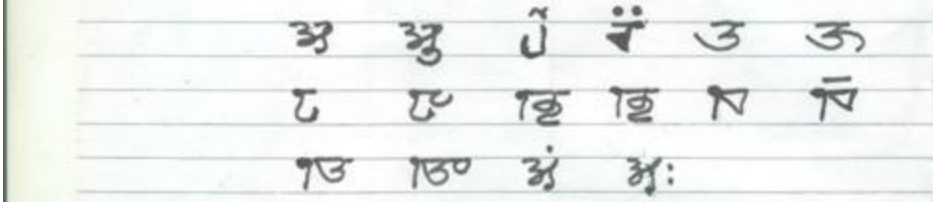

नियम-संख्या - 1.2 (नियम संख्या)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 लिपि के 𑆮𑇀𑆪𑆚𑇀𑆘𑆤𑆾𑆁 की 𑆄𑆑𑆸𑆠𑆴 :-

𑆑 𑆒 𑆓 𑆔 𑆕

𑆖 𑆗 𑆘 𑆙 𑆚

𑆛 𑆜 𑆝 𑆞 𑆟

𑆠 𑆡 𑆢 𑆣 𑆤

𑆥 𑆦 𑆧 𑆨 𑆩

𑆪 𑆫 𑆬 𑆮

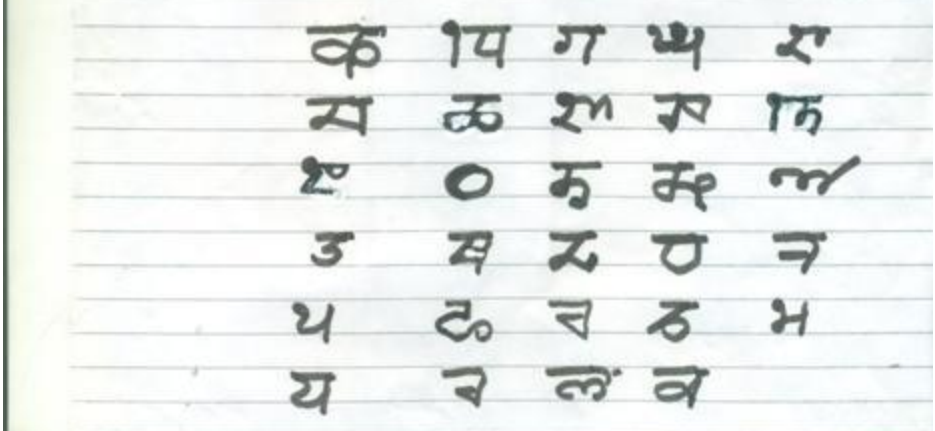

𑆯 𑆰 𑆱 𑆲

𑆑𑇀𑆰 𑆠𑇀𑆫 𑆘𑇀𑆚

नियम-संख्या 1.3 (नियम संख्या 1.3)

स्वर-मात्रा प्रयोग :—
(स्वर - मात्रा प्रयोग :—)

𑆑 (क) 𑆑𑆳 (का) 𑆑𑆴 (कि) 𑆑𑆵 (की) 𑆑𑆶 (कु)

𑆑𑆷 (कू) 𑆑𑆸 (कृ) 𑆑𑆹 (कॄ) 𑆑𑆼 (के) 𑆑𑆽 (कै)

𑆑𑆾 (को) 𑆑𑆿 (कौ) 𑆑𑆁 (कं) 𑆑𑆂 (कः)

नियम-संख्या-1.4 (नियम-संख्या-1.4

शारदा-लिपि वर्णमाला के कुछेक अपनी विशेषताएँ, जो देवनागरी की वर्णमाला में नहीं है :—
(शारदा - लिपि वर्णमाला के कुछेक (अपनी विशेषताएँ, जो देवनागरी की वर्णमाला में नहीं है)

ह्रस्व (ह्रस्व)	दीर्घ (दीर्घ)
(I). जप (जप)	जाप (जाप)
जग (जग)	जाग (जाग)
जगत (जगत)	जागरण (जागरण)
जल (जल)	

(II) संज्ञ	संज्ञान
अज्ञ	अज्ञान
विज्ञ	विज्ञान
प्रज्ञ	प्रज्ञान
(III) टप	टाप
टंक	टांकन
टंकन	टांकन

नियम-संख्या-1.5 (नियम-संख्या-1.5)

शारदा पाण्डुलिपि ग्रन्थों के साक्ष्य के आधार पर ह्रस्व 'उ' एवं दीर्घ "ऊ" मात्रा प्रयोग के पाँच प्रकार के रूप मिलते हैं।

(क) शब्द के आरम्भ में 'उ' मात्रा :-

उत्पल	उत्साह	उदर
उदक	उपाय	उचित

(ख) 'क' वर्ण की संलग्नता होने पर 'उ'-मात्रा की स्थिति :-

कुमार कुन्तल कुशल -

(कुश) (कुवलय) (कुबेर)

(ग) ('र' वर्ण की संलग्नता होने पर 'उ' मात्रा की स्थिति :—)

(रुचा) (रुद्र) (रुच्छित)
रुदिका (रुद्राक्ष) (रुचिर)

(घ) ("श्र" संयुक्त मात्रा वर्ण की संलग्नता होने पर 'उ' मात्रा - स्थिति) :—

(श्रुति), (श्रुवा), (श्रुत), (श्रुतिश्रुत)
(श्रुति पटु), (श्रुतिकटु), (श्रुत श्रुवस)

(ङ) (शारदा लिपि के लेखन में 'उ' मात्रा का सर्व-सामान्य प्रयोग) :-

(कुर), (कुरल) (तुला) (गुलाब)
(जुष्ट) (दुःख) (सुख) (ननु) (बुध)

(घ) शब्द के आरम्भ में "ऊ"

(ऊक), (ऊढा), (ऊढि), (ऊचल), (ऊक),

ऊधर, ऊचल, ऊष्मा, ऊषा, ॐ

(ङ) ('क' वर्ण की संलग्नता होने पर "ऊ" मात्रा की स्थिति) :—

(कूप) (कूच) (कूट) (कूल) (कूजित)

(कूचिका) (कूचर) (कूवर) (आकूत)

(च) "र" वर्ण की संलग्नता पर "ऊ" मात्रा की स्थिति :—

(रूप) (रूचक) (रूढि) (रूपकरण)

(रूपश्री) (रूपसाधना) (रूपरेखा), (रूढ़ी)

(छ) शारदा लिपि में "(क्रू)", "(ब्रू)", "(प्रू)", "(श्रू)" और "(त्र)" संयुक्त वर्णों की संलग्नता होने के कारण दीर्घ 'ऊ' का प्रयोग इस प्रकार से प्रदर्शित किया जाता है।

नियम-संख्या-1.6

I. (क्र) + उ = (क्रू)

(क्रूराकृति) (क्रूरात्मा) (क्रूराशय)

II. (ब्र) + उ = (ब्रू)

(ब्रू) (ब्रूवः) (ब्रूमः) (ब्रूहि)

III. (भ्र) + उ = (भ्रू)

(भ्रूक्षेप) (भ्रू भङ्ग) (भ्रूलता)

IV.

(श्र) + उ = (श्रू)

(शुश्रू) (शुश्रूषा) शुश्रूषण

V.

(त्र) + उ = (त्रू)

(नोट: "त्रू" के उदाहरण प्रस्तुत करना - सम्भव नहीं बन पाया)

नियम-संख्या-1.7 (नियम-संख्या-1.7)

(भारत लिपि के पाण्डुलिपि -

(Manuscripts) ग्रन्थों में "ऊ" दीर्घ —
मात्रा के दो और सर्वसाधारण (Common) —
रूपों का भी प्रचलन प्रचुर रहा है।

उदाहरण :—

(अ)

(मूढ), (मूहन), (घूर्णी), (शूल)

(शूद्र) (शूल्य) (शूकूल) (मूली)

(ब)

(सूती) (सूत्र) (सूतक) (सूर्यास्त)

(सूपक) (सूक्ष्म) (सूची), (सूचक)

विशेष-सूचना :—

शारदा लिपि में अधिकांश रूप-
में "ऊ" दीर्घ मात्रा का प्रयोग अधिक
निम्न-प्रकार से प्रयुक्त होता है :-

गूथ, मूल, चूल, तूली, धूम, दूत
दूत, दूल, आकूत, टूक।

(नियम-संख्या-1.8)

शारदा लिपि में "ऋ" मात्रा के दो व्यावहारिक प्रयोग स्वीकृत हैं :-

(अ) "क" वर्ग की संलग्नता के साथ :-

क + ऋ = कृ (कृपण)

(आ) (सर्व सामान्य प्रयोग)

(व + ऋ = वृ) (वृद्ध)

(अ) (उदाहरण)

(कृति) (कृष्ण) (कृतज्ञ) (कृत्रिम) (कृषि)

(कृतघ्न) (कृपया) (कृपाण) (कृतिकाम)

(आ) (तृण), (गृह), (घृत), (हृदय) (नृपति)

(शृगाल) (हृष्ट) (पृष्ठ) (मृगु) मृग,

(मृदा) (सृजन) (अमृत) धृति

शारदा लिपि में दीर्घ ॠ —

मात्रा —

के उदाहरण लौकिक संस्कृत —
में लगभग ही है)

(शारदा में प्रयुक्त मात्रा स्वरूप)

" ω + 3 = 3ω "
(कि + त = ति)

नियम-संख्या-1.9 (नियम-संख्या-1.9)

(शारदा वर्णमाला का एक
क्रमिक रूप :—

"स्वर" (स्वर)

(अकेला), (आकार), (इदम्), (ईरा),
(उपाय), (ऊषा), (ऋण), (एकल)
(ऐश), (ओतप्रोत), औरस, अंश,
(अः)

"व्यञ्जन" (व्यञ्जन)

(काला), (कुमार), (कृपालु), (कूपी)
(खल्लु), (गागर), (घर्म), (चतुर),
(छात्र), (जाल), , ञकार
(ठ कार), (डमरू), ढक्का, (तपस्या)

(थरत), (दामिनी), (धाम), (नगेन्द्र),
(घट), (फल), (बेलवान), (भानु),
(माला), (मावन), (रघुराज), (लवण),
(वचन), (शरण), (षटक), (सरस),
(हरण), (क्षमा), ज्ञानिमां, (ज्ञान)

(नियम-संख्या 1.10)

"शारदा लिपि में जब भी अग्र के हलन्त 'र' वर्ण के पश्च में मूर्धन्य 'ण' उपस्थित है, उस स्थिति में 'र + ण' दोनों ही वर्ण आपस में मिलकर एक नये संयुक्त वर्ण को जन्म देते हैं।"

(उदाहरण :–)

(कर + ण) = कर्ण[1] – कर्ण

(जीर्ण), (शीर्ण), चूर्ण, पूर्ण, वर्ण,
(उत्तीर्ण), (अर्णव), सुपर्ण, पूर्णिमा,

① (प्राचीन शारदा के ग्रन्थों में इस प्रकार के विकल्प मिलते हैं)

𑆤𑆴𑆪𑆩-𑆱𑆁𑆒𑇀𑆪𑆳 - 𑇒.𑇑
((नियम - संख्या - 2.1)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆘𑆧 𑆨𑆵 𑆃𑆓𑇀𑆫
(शारदा लिपि में जब भी अग्र
𑆑𑆼 𑆲𑆬𑆤𑇀𑆠 '𑆫𑇀' 𑆮𑆫𑇀𑆟 𑆑𑆼 𑆥𑆯𑇀𑆖 𑆩𑆼𑆁 "𑆪" 𑆮𑆫𑇀𑆟
के हलन्त "र" वर्ण के पश्च में 'य' वर्ण
𑆇𑆥𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠 𑆲𑆾, 𑆇𑆱 𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆫𑇀+𑆪 𑆢𑆾𑆤𑆾𑆁
उपस्थित हो, उस स्थिति में र + य दोनों
𑆲𑆵 𑆮𑆫𑇀𑆟 𑆃𑆥𑆱 𑆩𑆼𑆁 𑆩𑆴𑆬𑆑𑆫 𑆍𑆑 𑆤𑆪𑆼-
ही वर्ण आपस में मिलकर एक नये
𑆱𑆁𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠 𑆮𑆫𑇀𑆟 𑆑𑆾 𑆘𑆤𑇀𑆩 𑆢𑆼𑆠𑆼 𑆲𑆿𑇅
संयुक्त वर्णों को जन्म देते है)

𑆇𑆢𑆳𑆲𑆫𑆟 :-

𑆑𑆳𑆫𑇀 + 𑆪 = 𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪 (कार् + य = कार्य
𑆮𑆫𑇀 + 𑆪 = 𑆮𑆫𑇀𑆪 (वर् + य = वर्य

𑆄𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪, 𑆥𑆫𑇀𑆪𑆛, 𑆣𑆽𑆫𑇀𑆪, 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆪, 𑆥𑆫𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆠
(आचार्य) (पर्यट) (धैर्य) (पूर्य) (पर्याप्त)
𑆥𑆫𑇀𑆪𑆳𑆪, 𑆮𑆵𑆫𑇀𑆪, 𑆯𑆾𑆫𑇀𑆪, 𑆣𑆷𑆫𑇀𑆪, 𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪
(पर्याय) (वीर्य), (शौर्य) (धूर्य) (सूर्य)
𑆤𑆴𑆫𑇀𑆪𑆳𑆟, 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆪𑆾𑆓, 𑆥𑆫𑇀𑆪𑆳𑆑𑆶𑆬, 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆪𑆳𑆠
(निर्याण) (निर्योग), (पर्याकुल) (निर्यात)

𑆤𑆴𑆪𑆩-𑆱𑆁𑆒𑇀𑆪𑆳 - 𑇒.𑇒 (नियम-संख्या -2.2)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆘𑆧 𑆨𑆵 𑆃𑆓𑇀𑆫 𑆑𑆼 𑆲𑆬𑆤𑇀𑆠 "𑆫𑇀"
(शारदा लिपि में जब भी अग्र के हलन्त "र"
𑆮𑆫𑇀𑆟 𑆑𑆼 𑆥𑆯𑇀𑆖 𑆩𑆼𑆁 "𑆮" 𑆮𑆫𑇀𑆟 𑆇𑆥𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠 𑆲𑆾,
वर्ण के पश्च में 'व' वर्ण उपस्थित हो,
𑆇𑆱 𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆫𑇀+𑆮 𑆢𑆾𑆤𑆾𑆁 𑆲𑆵 𑆃𑆥𑆱 𑆩𑆼𑆁-
/उस स्थिति में र् + व दोनों ही आपस में -

(निकृष्ट), (सृष्टि), (वृष्टि)

(कृष्टि) (वृष्टि) (दृष्टि)

(तुष्टि) (पुष्टि) (यष्टि)

(दृष्ट) (अष्ट) (अनिष्ट)

(न् + ध = न्ध)

(गन्धर्व) (सुगन्ध) (दुर्गन्ध)

(निर्बन्ध) (अनुबन्ध) (प्रबन्ध)

(गान्धर्व) (अन्ध) (स्कन्ध)

(ब् + ध = ब्ध)

(लब्ध), (अब्धि) (स्तब्ध)

(लब्ध), (क्षुब्ध) (दग्ध)

नियम-संख्या- 2.9

संयुक्त व्यञ्जनों का-

अनुक्रम :—

1. [illegible], (ख) [illegible] [illegible] (अर्ख)
2. [illegible], (ग) [illegible] [illegible] (अर्ग)
3. [illegible], (च) [illegible] [illegible] (अर्च)
4. [illegible], (ज) [illegible] [illegible] (अर्ज)
5. [illegible], (ध) [illegible] [illegible] (अर्ध)
6. [illegible], (श) [illegible] [illegible] (अर्श)

[illegible] :—

1. [illegible] (ख)

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]
(अक्ख), (उक्ख), (वक्ख) (लक्ख) (मुक्ख)

2. [illegible] (ग)

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
(अग्ग), (मग्ग), (वग्ग), तग्ग,

3. [illegible] (च)

[illegible], [illegible], [illegible] [illegible]
(अच्च), (चच्च) (वच्च) (मच्च)

4. [illegible] (ज)

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],

5. (घ)

(अघ), (व्घ) (स्वघ) (गाघ), (माघ)

6. (श)

(अज्ञ), (भज्ञ), (मज्ञ) (जज्ञ) (दज्ञ) नज्ञ,

(नियम-संख्या - 2.4)

"शारदा के लिपि-विज्ञान में

(क) (घ) (छ) (ट) (ठ) (ड) (ढ) (त), (द)

(प), (फ), (ब) (भ) (म) (ल) (श) (स) (ह)

वर्णों के मध्यस्थ हलन्त "र" अग्रिम-वर्ण के ऊपर लिखा जाता है।" इन-वर्णों की संख्या 18 है।"

उदाहरण :—

(अर्क) (दीर्घ) (आर्छ) (अर्ट) (मर्ठ) (आर्ड)

(वर्ढ), (अर्घ) (आर्फ) (आर्ब), (गर्भ) (अर्म)

(आर्त) (कर्द) (आर्ल) (वर्ष) (अर्स) (लर्ह)

नियम-संख्या - 2.5 (नियम-संख्या-2.5)

"शारदा-लिपि में जब भी अग्र हलन्त "र" वर्ण के पश्चात् में "थ" वर्ण उपस्थित हो तो र् + थ - दोनों ही वर्ण आपस में मिलकर - एक नये वर्ण को जन्म देते है।"

उदाहरण :— (उदाहरण)

पार् + थ = पार्थ
(पार् + थ = पार्थ)

स्वार् + थ = स्वार्थ
(स्वार् + थ = स्वार्थ)

व्यर्थ, तीर्थ, प्रार्थना, कार्यार्थि,
(व्यर्थ) (तीर्थ) (प्रार्थना) (कार्यार्थि)

अर्थ, समर्थ, स्वार्थ, अर्थात्,
(अर्थ) (समर्थ) (स्वार्थ) (अर्थात्)

सिद्धार्थ, संदूरार्थ, पुरुषार्थ
(सिद्धार्थ) (संदूरार्थ) (पुरुषार्थ)

नियम-संख्या - 2.6 (नियम-संख्या-2.6)

"जब भी शारदा लिपि में हलन्त
क्, त्, न्, स् के पश्चात् में —

"थ" वर्ण की उपस्थिति हो तो "थ" वर्ण के आकार में रूप-परिवर्तन आता है।

उदाहरण :—

I. क् + थ = क्थ

II. त् + थ = त्थ

III. न् + थ = न्थ

IV. स् + थ = स्थ

(अभ्यास – क्रम) :—

I. (चाक्थन्), (नाक्थन्)
(विक्थन्), (द्राक्थन्)

II. (अश्वत्थन्), (अश्वत्थ)
(उत्थानम्), (वैत्थ)

III. (पन्थ), कोन्थ
(ग्रन्थ), (मन्थरा)

IV. स्थापय, स्थितप्रहस्य, स्थिर
(स्थापय), (स्थितप्रहस्य), (स्थिर)
अवस्था, अवस्थित, स्थापनाओं
(अवस्था), (अवस्थित), (स्थापनाओं)

नियम-संख्या - २.७ (नियम-संख्या-2.7)

शारदा-लिपि के "पाण्डुलिपि
(शारदा - लिपि के "पाण्डुलिपि —
वाङ्मय" के ग्रन्थों के ग्रन्थ-अध्ययन
वाङ्मय" के ग्रन्थों के ग्रन्थ-अध्ययन
के लिए शारदा-लिपि के संयुक्त-
के लिए शारदा - लिपि के संयुक्त
वर्णों का आपसी तालमेल के -
वर्णों का आपसी तालमेल के
परिप्रेक्ष्य का एक आवश्यक अभ्यास:-
परिप्रेक्ष्य का एक आवश्यक अभ्यास):-

"क"

क, (अथवा) क्क (क्क - कक) क्ख (क्ख)

क्ङ (क्ङ) क्च (क्च) क्ण (क्ण)

क्त (क्त) क्त्य (क्त्य) क्त्र (क्त्र)

क्न्य (क्न्य) क्त्व (क्त्व) क्थ (क्थ)

क्थ्य (क्थ्य) क्न (क्न) क्न्य (क्न्य)

क्ष (अथवा) (अथवा) क्प (क्प)

क्म (क्म) क्य (क्य) क्र (क्र)

[illegible] (क्प्य) [illegible] (क्ल) [illegible] (क्व)

[illegible] (क्ण्य क्य) [illegible] (क्षा)

[illegible] (क्ष्म) [illegible] (क्ष्य) [illegible] (क्ष्व)

[illegible] (ख्य) [illegible] (ख्र) [illegible], अथवा -

[illegible] (ङ्ण) [ङ्ण = कण्ठ अथवा कण्ठ — (कण्ण)] [illegible] (गद) [illegible] (ग्न) [illegible] (गर)

[illegible] (ग्म) [illegible] (ग्य), [illegible] (ग्र) [illegible] —

(ग्य्र) [illegible] (ग्व) [illegible] (घ्न) [illegible] (घ्र)

[illegible] (द्घ्न) [illegible] (घ्य) [illegible] (घ्र)

[illegible] (ङ्क) [illegible] (ख्य) [illegible] (ङ्घ) [illegible] (च्छ्व)

[illegible] (च्छ्र) [illegible] (ङ्क) [illegible] (ञ्च)

[illegible] (च्य) [illegible] (च्र) [illegible] (छ्य)

[illegible] (ज्ग) [illegible] (ज्ञ) [illegible] (ज्ञा)

[illegible] (ज्ञा) [illegible] (ज्ञ्या) [illegible] (ज्र)

[illegible] (ञ्य) [illegible] (ट्टा) [illegible] (ट्प)

[illegible] (ट्य) [illegible] (ट्ठ) [illegible] (ठ्य) [illegible] (ठ्र)

[illegible] (ण्ट) [illegible] (ण्ठ) [illegible] (ण्ड)

[illegible] (ण्ठ) [illegible] (ण्म) [illegible] (ण्य)

[illegible] (त्य) [illegible] (त्व) [illegible] (त्त्व)

[illegible] (त्थ) [illegible] (त्न) [illegible] (त्प)

[illegible] (त्प्र) [illegible] (त्म्य) [illegible] (त्य) [illegible] (त्र्य)

[illegible] (त्स) [illegible] (त्स्न) [illegible] (त्स्य)

[illegible] (त्स्य) [illegible] (थ्न) [illegible] (थ्य) [illegible] (द्ग)

[illegible] (द्द) [illegible] (द्ध) [illegible] (द्ब) [illegible] (द्भ)

[illegible] (द्म) [illegible] (द्य) [illegible] (द्र) [illegible] (द्व)

[illegible] (ध्न) [illegible] (ध्म) [illegible] (ध्य) [illegible] (ध्र)

[illegible] (ध्व) [illegible] (न्क) [illegible] (न्त) [illegible] (न्त्य)

[illegible] (न्थ) [illegible] (न्द्र) [illegible] (न्ध) [illegible] (न्न)

[illegible] (न्प) [illegible] (न्प्र) [illegible] (न्फ)

[illegible] (न्म) [illegible] (न्य) [illegible] (न्व) [illegible] (न्स)

[illegible] (न्ह) [illegible] (प्त) [illegible] (प्न) [illegible] (प्त्व

[illegible] (प्म) [illegible] (प्य) [illegible] (प्र) [illegible] (प्ल)

[illegible] (म्र) [illegible] (म्ल) [illegible] (म्व) [illegible] (प्य)

[illegible] (प्व) [illegible] (स्त्र) [illegible] (स्थ) —

𑆱𑇀𑆑𑆳 (स्का) 𑆲𑇀𑆑𑆳 (ह्का) 𑆬𑇀𑆥 (ल्प) 𑆬𑇀𑆦 (ल्फ)

𑆬𑇀𑆩 (ल्म) 𑆬𑇀𑆫 (ल्र) 𑆬𑇀𑆮 (ल्व) 𑆮𑇀𑆫 (व्र)

𑆧𑇀𑆫 (ब्र) 𑆯𑇀𑆬 (श्ल) 𑆯𑇀𑆤 (श्न) 𑆯𑇀𑆪 (श्य)

𑆱𑇀𑆩𑇀𑆪 (स्मय (या) स्म्य) 𑆱𑇀𑆫 (स्र) 𑆱𑇀𑆮 (स्व)

𑆱𑇀𑆱 (स्स) 𑆱𑇀𑆲 (स्ह) 𑆯𑇀𑆫 (श्र) 𑆯𑇀𑆫𑇀𑆪 (श्रय)

𑆯𑇀𑆬 (श्ल) 𑆯𑇀𑆯 (श्श) 𑆰𑇀𑆛 (ष्ट) 𑆰𑇀𑆛𑇀𑆪 (ष्ट्य)

𑆰𑇀𑆛𑇀𑆫 (ष्ट्र) 𑆰𑇀𑆛𑇀𑆮 (ष्ट्व), 𑆰𑇀𑆜 (ष्ठ), 𑆰𑇀𑆥 (ष्प)

𑆰𑇀𑆦 (ष्फ) 𑆰𑇀𑆥𑇀𑆫 (ष्प्र) 𑆰𑇀𑆩 (ष्म) 𑆰𑇀𑆮 (ष्व)

𑆰𑇀𑆪 (ष्य) 𑆱𑇀𑆑 (स्क) 𑆱𑇀𑆒 (स्ख) 𑆱𑇀𑆠 (स्त)

𑆲𑇀𑆟 (ह्ण) 𑆲𑇀𑆤 (ह्न) 𑆲𑇀𑆩 (ह्म) 𑆲𑇀𑆪 (ह्य)

𑆲𑇀𑆫 (ह्र) 𑆲𑇀𑆬 (ह्ल)

𑆤𑆴𑆪𑆩-𑆱𑆁𑆒𑇀𑆪𑆳-2.8 (नियम-संख्या - 2.8)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳𑆬𑆴𑆥𑆴𑆑𑆼 𑆥𑆳𑆟𑇀𑆝𑆶𑆬𑆴𑆥𑆴-𑆓𑇀𑆫𑆤𑇀𑆡𑆾𑆁 𑆥𑆫 𑆯𑆾𑆣-
(शारदा लिपि के पाण्डुलिपि-ग्रन्थों पर शोध
𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆮𑆳𑆬𑆼 𑆯𑆾𑆣-𑆗𑆳𑆠𑇀𑆫 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆑𑆵 𑆃𑆱𑇀𑆥𑆰𑇀𑆛𑆠𑆳𑆑𑆼
करने वाले शोध-छात्र लिपि की अस्पष्टता के
𑆑𑆳𑆫𑆟 𑆃𑆱𑆶𑆮𑆴𑆣𑆳 𑆙𑆼𑆬𑆠𑆼 𑆲𑆽𑇅 𑆃𑆠𑆂 𑆇𑆤𑆑𑆼
कारण असुविधा झेलते हैं। अतः उनके
𑆩𑆳𑆫𑇀𑆓𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍 𑆑𑆶𑆗𑆼𑆑 𑆄𑆮𑆯𑇀𑆪𑆑-
मार्गदर्शन के लिए कुछेक आवश्यक
𑆱𑆁𑆑𑆼𑆠 𑆥𑇀𑆫𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠 𑆲𑆽:—
संकेत प्रस्तुत हैं)

क.

"[illegible] + [illegible]" = "[illegible]"
((द + र = द्र)

[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]

ख.

[illegible] + [illegible] = [illegible]
(द + ध = द्ध)

[illegible] (समुद्र), [illegible] (बुद्धि), [illegible] (शुद्धि)
[illegible] (वृद्धि), [illegible] (संसिद्धौ), [illegible] (योद्धा)
[illegible], [illegible], [illegible],
(वृद्ध) (सिद्धार्थ) (सिद्ध)

ग.

[illegible] + [illegible] = [illegible]

𑆨𑆴𑆑𑇀𑆰𑆶, 𑆩𑆶𑆰𑇀𑆜𑆴, 𑆮𑆸𑆰𑇀𑆜𑆴
(भिक्षुः), (मुष्टि), (वृष्टि)

𑆠𑆶𑆰𑇀𑆜𑆴 𑆮𑆸𑆰𑇀𑆜𑆴 𑆲𑆸𑆰𑇀𑆜𑆴
(तुष्टि) (वृष्टि) (हृष्टि)

𑆥𑆶𑆰𑇀𑆜𑆴 𑆱𑆸𑆰𑇀𑆜𑆴 𑆪𑆰𑇀𑆜𑆴
(पुष्टि) (सृष्टि) (यष्टि)

𑆲𑆸𑆰𑇀𑆜 𑆑𑆸𑆰𑇀𑆜 𑆑𑆤𑆴𑆰𑇀𑆝
(हृष्ट (कृष्ट) (कनिष्ठ)

(𑆣) 𑆤𑇀 + 𑆣 = 𑆤𑇀𑆣 (न्ध)
(न् + ध = न्ध)

𑆓𑆤𑇀𑆣𑆫𑇀𑆮, 𑆱𑆶𑆓𑆤𑇀𑆣, 𑆢𑆶𑆫𑇀𑆓𑆤𑇀𑆣,
(गन्धर्व) (सुगन्ध) (दुर्गन्ध)

𑆤𑆴𑆧𑆤𑇀𑆣, 𑆃𑆤𑆶𑆧𑆤𑇀𑆣, 𑆅𑆥𑆧𑆤𑇀𑆣,
(निर्बन्ध) (अनुबन्ध) (उपबन्ध)

𑆓𑆳𑆤𑇀𑆣𑆫𑇀𑆮, 𑆃𑆤𑇀𑆣, 𑆱𑇀𑆑𑆤𑇀𑆣
(गान्धर्व) (अन्ध) (स्कन्ध)

(𑆤) 𑆧𑇀 + 𑆣 = 𑆧𑇀𑆣 (ब्ध)
(ब् + ध = ब्ध)

𑆬𑆧𑇀𑆣, 𑆃𑆧𑇀𑆣𑆴 𑆱𑇀𑆠𑆧𑇀𑆣
(लब्ध) (अब्धि) (स्तब्ध)

𑆧𑆧𑇀𑆣, 𑆧𑆢𑇀𑆣 𑆢𑆓𑇀𑆣
(बब्ध) (बद्ध) (दग्ध)

नियम-संख्या - 2.9

शुद्धक वर्ण-पदों का-

अनुक्रम :—

I. "𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆱𑇀𑆪 𑆄𑆠𑇀𑆩𑆮𑆴𑆯𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆴 —

𑆃𑆲𑆁𑆨𑆳𑆮𑆾 𑆲𑆴 𑆑𑆵𑆫𑇀𑆠𑆴𑆠𑆂"

(प्रकाशस्य आत्मविश्रान्ति अहंभावो हि कीर्तितः)

II. "𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆼 𑆱𑇀𑆮𑆠𑆂 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆁 —

𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳𑆑𑆳𑆪𑆳𑆯𑇀𑆫𑆴𑆠𑆳 𑆱𑆠𑆵"

(तत्र ज्ञाने स्वतः सिद्धं क्रियाकायाश्रिता सती)

III. "𑆑𑆴𑆁 𑆃𑆥𑆫𑆼 𑆩𑆸𑆓𑆪𑆼 𑆨𑆮𑆠𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆨𑆾!"

(किं अपरे मृगये भवतः प्रभो)

"𑆯𑆶𑆨𑆯𑆠𑆳𑆤𑆴 𑆇𑆢𑆴𑆠𑆳𑆤𑆴 𑆠𑆢𑆽𑆮 𑆩𑆼"

(शुभशतानि उदितानि तदैव मे)

IV. [illegible] —

[illegible]

नियम-संख्या - 2.10

[illegible]